क्रिया

क्रिया की परिभाषा

किसी कार्य के करने या होने के बोध को क्रिया कहते है। क्रिया का अर्थ है – कार्य। कार्य या तो किया जा ता है या उसके होने का बोध (ज्ञान) होता है।

परिभाषा :- क्रिया से कार्य के करने या होने का बोध होता है;

जैसे -

(क) रूपा गाड़ी चलाती है।

(ख) राम मशीन चला रहा है।

(ग) गीता गाना गा रही है।

(घ) श्याम खाना खा रहा है।

(ङ) तुम घर जा रहे हो।

उसी तरह क्रिया से किसी कार्य के करने या किसी स्थिति में होने का बोध होता है;

जैसे -

(क) यह रूमाल **है।**

(ख) श्यामा ने खाना **खाया।**

(ग) विनय रोज़ विद्यालय **जाता है।**

इन वाक्यों में -

(क) 'है' रूमाल की स्थिति दर्शाता है।

(ख) 'श्यामा' के खाना खाने का पता चलता है।

(ग) 'रोज़ विद्यालय जाता है' से 'विनय' के विद्यालय जाने का पता चलता है।

धातु :-

क्रिया का निर्माण कुछ मूल शब्दों में विकार होने से होता है, ऐसे शब्दों को धातु कहते हैं।; जैसे - चल, आ, खा, रख, बैठ, दौड़, रूक, कह।

आ - आता, आऊँगा, आईए आदि।

चल – चलना, चला, चलूँगा।

खा – खाना, खाया, खाऊँगा।

कह – कहना, कहा, कहूँगा।

जब क्रिया के धातु रूप में ना लगा दिया जाता है तो क्रिया का रूप सामान्य बन जाता है; जैसे -

धातु		**सामान्य रूप**
पढ़	पढ + ना	पढना
चल	चल + ना	चलना
हँस	हँस + ना	हँसना
कह	कह + ना	कहना
रो	रो + ना	रोना
भाग	भाग + ना	भागना

ये सब आदि क्रियापद हैं।

यदि हम इन क्रिया पदों के ना को हटा दें तो यह क्रिया का धातु रूप बन जाता है।

क्रिया के भेद :-

क्रिया के दो भेद होते हैं - अकर्मक क्रिया व सकर्मक क्रिया।

क्रिया के भेद - अर्कमक क्रिया

जो क्रिया शब्द कर्म के बिना वाक्य को पूरा बनाते हैं, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे - चलना, फिरना, हँसना, रोना, दौड़ना, मुस्कुराना आदि। ये भी दो प्रकार की हैं पूर्ण और अपूर्ण।

पूर्ण अकर्मक – जैसा नाम है 'पूर्ण' अर्थात् 'पूरा' इन्हें अपनी पूर्णता बताने के लिए पूरक की आवश्यकता नहीं पड़ती अर्थात् अपना अर्थ स्वयं ही पूरा कर देती हैं।

1. बच्चा रो रहा है।

2. लड़की हँस रही है।

3. वे सो रहे हैं।

4. वह गा रहा है।

5. चिड़ियाँ उड़ रही है।

अपूर्ण अकर्मक – ये क्रिया अपना अर्थ पूर्ण रुप में व्यक्त नहीं करती। इसको पूरा करने के लिए कर्ता से संबंध रखने वाले किसी शब्द की आवश्यकता पड़ती है, इन्हें पूरक कहते हैं; जैसे - होना, बनना, निकलना आदि;

जैसे -

1. वह ईमानदार लगा।

2. वह बेईमान निकली।

3. बच्चा बीमार है।

इनमें ईमानदार, बेईमान, बीमार आदि शब्दों के प्रयोग के बिना वाक्य अधूरा लगता है। प्राय: पूरक शब्दों के स्थान पर विशेषण या संज्ञा का प्रयोग होता है।

क्रिया के भेद - सकर्मक क्रिया

जिन क्रिया शब्दों में कर्म की आवश्यकता होती है, वे सकर्मक क्रिया कहलाती
हैं; जैसे - पढ़ना, लिखना, पीना, देना आदि। सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती हैं -

1. पूर्ण सकर्मक

2. अपूर्ण सकर्मक

पूर्ण सकर्मक :– ये क्रियाएँ अपने अर्थ को अपने आप पूरी तरह व्यक्त कर पाने में समर्थ होती हैं। ये भी दो तरह की होती हैं -

(क) एक कर्मक – ये क्रियाएँ केवल एक कर्म लेती हैं;

जैसे -

1. मोहन अखबार पढ़ रहा है।

2. वे अमरुद खा रहे हैं।

3. शीला गाना गा रही है।

(ख) द्विकर्मक – इन पूर्ण सकर्मक क्रियाओं में दो कर्म होते हैं; जैसे – भेजना, लेना, देना, खरीदना आदि। इसमें 'किसे' और 'किसको' के उत्तर होते हैं;

जैसे -

1. मैंने शीला को किताब दी।

2. मैंने माँ को पत्र लिखा।

3. उसने रामलाल से मकान खरीदा।

अपूर्ण सकर्मक क्रिया –इन क्रियाओं में कर्म होने पर भी अर्थ पूरी तरह व्यक्त नहीं होता है। इसमें कर्म से संबंधित कर्म पूरक का सहारा लेती है; जैसे - मानना, चुनना, बनाना आदि।

उदाहरण –

1. वह गीता को पागल समझता है। कर्म पूरक

2. वह अपने को अध्यापिका कहती है। कर्म पूरक

3. उसने तुम्हें ही जज क्यों बनाया। कर्म पूरक

<u>अकर्मक और सकर्मक क्रिया में अंतर</u> :-

यदि किसी क्रिया में 'क्या' प्रश्न पूछा जाए तो उत्तर में संज्ञा शब्द आता है, तो वह सकर्मक क्रिया होती है; जैसे –''मोहन किताब पढ़ रहा है।''इसमें क्या का उत्तर किताब है।

इसी तरह जिस क्रिया में 'क्या' के उत्तर में कोई संज्ञा (कर्म) प्राप्त नहीं होता, वह अकर्मक क्रिया है;

जैसे - लड़की हँस रही है।

इस वाक्य में 'क्या' प्रश्न की संभावना नहीं है।

<u>मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया</u>:-

मुख्य क्रिया – मुख्य क्रिया कर्ता या कर्म के मूल कार्य को बताती है; जैसे - कार्य को बताना, पढ़ना, घटना को बताना - गिरना, अस्तित्व को बताना - बैठा था, संबंध को बताना।

उदाहरण -

1. वह पढ़ रहा है।

2. सब लोग आँगन में बैठे हैं।

3. पहले वह खिलाड़ी था अब नेता बन गया है।

<u>सहायक क्रिया</u>

क्रिया पद में मुख्य क्रिया के बाद जो अंश बचता है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं; जैसे - रही है, पाता, लगा, चुका हूँ;

उदाहरण -

1. बच्चा चला गया। (काल सूचक)

2. अध्यापक आते होंगे। (काल सूचक)

3. मैंने आपको पत्र भेजा है। (पक्ष सूचक)

4. वह मिठाई बना सकती है। (वृत्ति बोधक)

5. मैं घर जा रहा हूँ। (कर्तृवाच्य)

6. लड़के से खाना नहीं खाया जाता। (कर्मवाच्य)

अर्थात् सहायक क्रिया - काल, पक्ष, वाच्य, कर्म, वृत्ति आदि का बोध कराती है।

रंजक क्रिया:-

रंजक क्रियाएँ कहीं मुख्य अर्थ को बढ़ाती-घटाती है, कहीं किसी को दबाती है तो कहीं उभारती है, इसलिए रंजक कहा गया है; जैसे - करना, टपकना, आना, जाना, लगना, बसना, चलना, मरना, देना, लेना आदि।

यौगिक क्रिया:-

इसमें दो क्रियाएँ साथ चलती है; जैसे -

1. वह सामान रख गया।

2. मुझे खाना ले जाना है।

3. वह घर पर आ पहुँची है।

4. उसने गुंडे को मार भगाया।

रचना के आधार पर क्रिया भेद:-

1. सरल क्रिया – ये क्रियाएँ रुढ़ शब्दों की तरह प्रचलित हैं, इसलिए इन्हें 'मूल' क्रिया भी कहते हैं; जैसे - आना-जाना, पढ़ना-लिखना, पीना आदि इसकी मूलधातु है, आ, जा, पढ़, लिख आदि।

2. संयुक्त क्रिया – ये दो धातुओं के योग से बनती हैं। परन्तु मुख्य अर्थ पहली धातु से ही बताया जाता है; जैसे - चल देना, कर लेना, आ गया आदि।

उदाहरण -

मैंने किताब खरीद ली।

बादल घिर आए थे।

मैं कभी-कभी आ जाया करता था।

क्या तुम मेरा पत्र दे आओगे।

3. नाभिक क्रिया/मिश्र क्रिया – इस क्रिया में पहला अंश संज्ञा या क्रिया विशेषण होता है और दूसरा अंश क्रिया होता है; जैसे -

1. दर्शन + करना = दर्शन करना

2. सुंदर + दिखना = सुंदर दिखना

3. दान + देना = दान देना

4. प्यारा + लगना = प्यारा लगना

5. याद + आना = याद आना

4. समस्त क्रिया – यह क्रिया दो धातुओं के योग से बनती है, दोनों के योग से एक समस्त पद बन जाता है; जैसे - 1. लिख-पढ़, 2. चल-फिर, 3. उठ-बैठ आदि।

5. नाम धातु क्रिया – इन क्रियाओ के धातु में संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण शब्दों में प्रत्यय लगाकर धातुएँ बनती हैं; जैसे -

1	शरम	शरमाना
2	हाथ	हथियाना
3	दुख	दुखना
4	झूठ	झुठलाना

5	अपना	अपनाना
6	रंग	रंगना
7	चिकना	चिकनापन
8	साठ	सठियाना
9	चक्कर	चकराना
10	बात	बतियाना

6. प्रेरणार्थक व व्युत्पन्न क्रिया – इस क्रिया में एक संज्ञा दूसरी संज्ञा को प्रेरित करती है या प्रेरणा देती है; जैसे -

माँ बच्चे को दूध पिला रही है।

प्रेरक संज्ञा प्रेरित संज्ञा कर्म प्रेरणार्थक क्रिया

मोहन चिड़िया उड़ा रहा है।

प्रेरक संज्ञा प्रेरित संज्ञा प्रेरणार्थक क्रिया

द्वितीय प्रेरणार्थक – इसमें तीन प्रक्रियाएँ होती हैं;

जैसे -

1. वह नौकरानी से कपड़े धुलवा रही है।

2. माँ आया से बच्चे को दूध पिलवा रही है।

3. मालिक माली से बाग की सफाई करवा रहा है।

4. सिखाना – सिखवाना

5. काटना – कटवाना

6. दौड़ाना – दौड़वाना

7. सुनाना – सुनवाना

8. रुलाना - रुलवाना

1. **समापिका तथा असमापिक क्रियाएँ** –

समापिका क्रियाएँ वाक्य को समाप्त करती है, वाक्य के अंत में आती हैं; जैसे -

1. बच्चे खेल रहे हैं।

2. वे भागते हैं।

3. हम हँसते हैं।

4. वह दिल्ली गया।

5. तुम काम कर चुके हो।

2. असमापिका क्रियाएँ - ये क्रियाएँ वाक्य समाप्त नहीं करती बल्कि अन्यत्र कहीं आती हैं; जैसे -

1. सभी बैठकर बातें करो।

2. आपसे मिलकर खुशी हुई।

3. वह रोते-रोते थक गया है।

पूर्वकालिक तथा तात्कालिक क्रियाएँ-

पूर्वकालिक - यह क्रिया मुख्य क्रिया से पहले होनी वाली क्रिया कहलाती है, इसकी धातु में 'कर' प्रत्यय लगता है -

1. राम पढ़कर सो गया।

2. यहाँ उठकर बैठो।

3. वह खाना खाकर बाहर गया।

<u>तात्कालिक</u> क्रिया मुख्य क्रिया से पहले पूरी होती है; जैसे -

(1) वह आते ही सो गया।

(2) वह शेर देखते ही बेहोश हो गया।

<u>अनुकरणात्मक क्रियाएँ</u>– ये क्रियाएँ ध्वनियों के अनुकरण पर बनती हैं; जैसे -

1 हिन-हिन

↓

हिनहिनाना

2 खट-खट

↓

खटखटाना

3 टन-टन

↓

टनटनाना

4 बड़-बड़

↓

बड़बड़ाना

क्रिया के काल

काल :- क्रिया के जिस रुप से यह ज्ञात हो कि क्रिया किस समय हुई है, उसे क्रिया का काल कहते हैं।

(i) तपस्या पढ़ रही है।

(ii) कल मैंने चार केले खाए थे।

(iii) कल मैं मेला देखने जाऊँगा।

ऊपर लिखे गए वाक्यों में रंगीन शब्दों को ध्यान से देखिए। इनमें पढ़ रही है, खाए थे, देखने जाऊँगा क्रिया शब्द हैं। इन शब्दों को ध्यान से पढ़ने से यह पता चलता है कि इन क्रिया शब्दों से क्रिया के अलग-अलग समय पर होने का बोध हो रहा है।

(i) 'वह पढ़ रही है।' इस क्रिया से यह पता चलता है कि कार्य इस समय में हो रही है।

(ii) 'खाए थे' से क्रिया के पहले (बीते हुए समय में) हो चुकने का पता चलता है।

(iii) 'देखने जाऊँगा' से आने वाले समय में क्रिया के होने का बोध होता है।

क्रिया से काल (समय) का बोध होता है। समय परिवर्तनशील है। इसमें बदलाव होना स्वाभाविक है। समय के इस परिवर्तन के आधार पर काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं -

(1) वर्तमान काल

(2) भूतकाल

(3) भविष्यकाल

काल के भेद – भूतकाल

(2) भूतकाल :- क्रिया के जिस रुप से यह ज्ञात हो कि कार्य बीते हुए समय में हुआ है, उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे -

(i) मैंने वह पुस्तक पढ़ी।

(ii) मैं स्कूल जाता था।

भूतकाल के निम्नलिखित छः भेद होते हैं –

(क) सामान्य भूतकाल :- क्रिया के जिस रुप से बीते हुए समय में कार्य के होने का बोध हो किंतु ठीक समय का ज्ञान न हो, वहाँ सामान्य भूतकाल होता है; जैसे -

(i) मैंने खाना खा लिया।

(ii) 'रामायण' वाल्मीकि ने लिखी।

(ख) आसन्न भूतकाल :- इसमें यह जाना जाता है कि कार्य भूतकाल में आरंभ होकर अभी-अभी समाप्त हुआ है; जैसे -

(i) मैंने अपना कमरा साफ़ कर लिया है।

(ii) मेरा गृहकार्य समाप्त हो गया है।

(ग) पूर्ण भूतकाल :- इसमें यह पता चलता है कि कार्य भूतकाल में बहुत पहले पूरा हो चुका है; जैसे -

(i) मैं वहाँ गया था।

(ii) उसने अपना कार्य पूरा कर लिया था।

(घ) अपूर्ण भूतकाल :- जहाँ बीते हुए समय में चल रहा कार्य अभी पूरा नहीं हुआ हो, वहाँ अपूर्ण भूतकाल होता है; जैसे -

(i) माँ खाना बना रही थी।

(ii) मीना पढ़ रही थी।

(ङ) संदिग्ध भूतकाल :- जहाँ बीते हुए समय में काम के बारे में संदेह हो, वहाँ संदिग्ध भूतकाल होता है; जैसे -

(i) कल ज़रुर यहाँ बारिश हुई होगी।

(ii) अब तक तो वह चला गया होगा।

(च) हेतु-हेतुमद भूतकाल :- क्रिया के जिस रुप से बीते हुए समय में एक क्रिया के होने पर दूसरी क्रिया का होना आश्रित हो अथवा एक क्रिया के न होने पर दूसरी क्रिया का न होना आश्रित हो, वहाँ हेतु-हेतुमद भूतकाल होता है; जैसे -

(i) यदि तुमने बुलाया होता तो मैं अवश्य आता।

(ii) यदि तुमने ठीक से पढ़ाई की होती तो परीक्षा में अवश्य सफल होते।

काल के भेद – भविष्यकाल

(3) भविष्य काल :- क्रिया के जिस रुप से यह ज्ञात हो कि कार्य भविष्य में होगा, उसे भविष्यकाल कहते हैं; जैसे -

(i) मैं कल मसूरी जाऊँगा।

(ii) आज वह आएगा।

इसके निम्नलिखित दो भेद हैं –

(क) सामान्य भविष्यकाल :- क्रिया के जिस रुप से कार्य के भविष्य में होने का बोध हो, उसे सामान्य भविष्यकाल कहते हैं; जैसे -

(i) वह मुझे ले जाएगा।

(ii) मैं भी बाज़ार जाऊँगा।

(ख) संभाव्य भविष्य काल :- क्रिया के जिस रुप से कार्य के भविष्य में होने की संभावना का बोध हो, वहाँ संभाव्य भविष्यकाल होता है; जैसे -

(i) शायद वह नहीं आएगा।

(ii) हो सकता है आज बारिश हो।

काल के भेद – वर्तमानकाल

(1) वर्तमान काल :- क्रिया के जिस रुप से पता चले कि कार्य अभी (वर्तमान) घट रहे समय में हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। जो कार्य हमेशा होता रहता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; जैसे -

(i) बहुत तेज़ हवा चल रही है।

(ii) मैं अपने कमरे में जा रहा हूँ।

(iii) मैं रोज़ सुबह स्नान करता हूँ।

वर्तमान काल के निम्नलिखित तीन भेद हैं -

(क) सामान्य वर्तमान काल :- इसमें क्रिया का वर्तमान काल में सामान्य रुप से होने का पता चलता है; जैसे -

(i) बच्चा रोता है।

(ii) फूल खिलते हैं।

(ख) अपूर्ण वर्तमान काल :- क्रिया के जिस रुप से यह पता चलता है कि कार्य अभी चल रहा है (समाप्त नहीं हुआ है), उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते है; जैसे -

(i) बच्चा रो रहा है।

(ii) चेतन खाना खा रहा है।

(iii) बस आ रही है।

(ग) संदिग्ध वर्तमानकाल :- क्रिया के जिस रुप से उसके वर्तमान काल के होने में संदेह का बोध हो, उसे संदिग्ध वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे -

(i) केशव जा रहा होगा।

(ii) शायद वह आ रहा है।

(iii) हो सकता है यह उसकी कलम है।